

सम्राट अशोक के धम्म का सांस्कृतिक प्रभाव : भारतीय समाज के विशेष संदर्भ में

कु. कनिष्का*¹, डॉ. दुर्वेश²

¹पी एच डी शोध छात्रा, कला एवं सामाजिक विज्ञान संकाय, स्वामी विवेकानंद सुभारती

विश्वविद्यालय, मेरठ-250002, उत्तर प्रदेश, भारत

²सहायक आचार्य, कला एवं सामाजिक विज्ञान संकाय, स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ-

250002, उत्तर प्रदेश, भारत

Article Received: 28 May 2026

Article Revised: 17 June 2026

Published on: 06 July 2026

*Corresponding Author: कु. कनिष्का

पी एच डी शोध छात्रा, कला एवं सामाजिक विज्ञान संकाय, स्वामी विवेकानंद सुभारती

विश्वविद्यालय, मेरठ-250002, उत्तर प्रदेश, भारत

DOI: <https://doi-doi.org/101555/ijrpa.4058>

शोध-सार

सम्राट अशोक भारतीय इतिहास के ऐसे महान शासक थे जिन्होंने कलिंग युद्ध के उपरांत अपने शासन की दिशा को विजय और विस्तारवाद से हटाकर नैतिकता, करुणा तथा लोककल्याण की ओर मोड़ दिया। उन्होंने अपने धम्म के माध्यम से भारतीय समाज में ऐसे सांस्कृतिक मूल्यों की स्थापना का प्रयास किया, जो किसी एक धर्म या संप्रदाय तक सीमित न होकर संपूर्ण मानवता के कल्याण पर आधारित थे। अशोक का धम्म सत्य, अहिंसा, दया, सहिष्णुता, सदाचार, आत्मसंयम तथा सभी धर्मों के प्रति सम्मान जैसे सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांतों पर आधारित था।

प्रस्तुत शोधपत्र में सम्राट अशोक के धम्म के भारतीय समाज पर पड़े सांस्कृतिक प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि अशोक के धम्म ने सामाजिक समरसता, धार्मिक सहिष्णुता, नैतिक जीवन, लोककल्याण, प्रशासनिक उत्तरदायित्व तथा सांस्कृतिक एकता को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके शिलालेखों एवं स्तंभलेखों के माध्यम से धम्म का प्रचार-प्रसार केवल भारत तक सीमित नहीं रहा, बल्कि श्रीलंका, मध्य एशिया तथा दक्षिण-पूर्व एशिया तक भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के प्रसार का माध्यम बना। अशोक द्वारा धम्म महामात्रों की नियुक्ति, वृक्षारोपण, चिकित्सालयों की स्थापना, पशु संरक्षण, यात्रियों के लिए विश्रामगृह एवं जल-सुविधाओं की व्यवस्था जैसे लोकहितकारी कार्यों ने भारतीय संस्कृति में मानवतावादी दृष्टिकोण को सुदृढ़ किया।

यह शोधपत्र ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है तथा अभिलेखीय साक्ष्यों, बौद्ध साहित्य एवं आधुनिक इतिहासकारों के मतों के आधार पर अशोक के धम्म के सांस्कृतिक प्रभावों का मूल्यांकन प्रस्तुत करता है। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि सम्राट अशोक का धम्म भारतीय संस्कृति की समन्वयवादी, उदार एवं मानवीय परंपरा का महत्वपूर्ण आधार है, जिसकी प्रासंगिकता वर्तमान समय में भी सामाजिक सद्भाव, धार्मिक सहिष्णुता, विश्वशांति एवं नैतिक मूल्यों की स्थापना के संदर्भ में बनी हुई है।

मुख्य शब्द: सम्राट अशोक, धम्म, सांस्कृतिक प्रभाव, भारतीय समाज, धार्मिक सहिष्णुता, सामाजिक समरसता, नैतिक मूल्य, लोककल्याण, अभिलेख, बौद्ध संस्कृति।

सम्राट अशोक के धम्म की अवधारणा एवं स्वरूप

भारतीय इतिहास में सम्राट अशोक का व्यक्तित्व केवल एक शक्तिशाली सम्राट के रूप में ही नहीं, बल्कि एक ऐसे लोकनायक के रूप में भी प्रतिष्ठित है जिसने शासन को नैतिकता, मानवता और लोककल्याण के सिद्धांतों पर आधारित करने का प्रयास किया। मौर्य साम्राज्य के तृतीय शासक अशोक ने कलिंग युद्ध (लगभग 261 ईसा पूर्व) के पश्चात जिस गहन आत्ममंथन का अनुभव किया, उसने उनके जीवन और शासन की दिशा ही परिवर्तित कर दी। युद्ध की विभीषिका, असंख्य लोगों की मृत्यु तथा जन-धन की अपार हानि ने उन्हें यह अनुभव कराया कि सैन्य विजय की अपेक्षा नैतिक विजय अधिक स्थायी और सार्थक होती है। इसी वैचारिक परिवर्तन के परिणामस्वरूप उन्होंने 'धम्म' की अवधारणा को विकसित किया और उसे अपने शासन का आधार बनाया।

अशोक के अभिलेखों में प्रयुक्त "धम्म" शब्द का अर्थ किसी विशेष धार्मिक सम्प्रदाय, मत या कर्मकाण्ड से नहीं है। यह एक व्यापक नैतिक एवं सामाजिक जीवन-पद्धति का द्योतक है, जिसका उद्देश्य व्यक्ति, समाज तथा राज्य के मध्य संतुलन स्थापित करना था। अशोक का धम्म सार्वभौमिक नैतिक मूल्यों पर आधारित था, जिसमें सत्य, अहिंसा, करुणा, दया, आत्मसंयम, सहिष्णुता, सदाचार, माता-पिता एवं गुरुजनों का सम्मान, प्राणिमात्र के प्रति संवेदना तथा लोककल्याण को प्रमुख स्थान दिया गया। इस प्रकार उनका धम्म धर्म की संकीर्ण परिभाषा से ऊपर उठकर एक मानवीय आचार-संहिता के रूप में विकसित हुआ।

अशोक के धम्म का मूल उद्देश्य समाज में नैतिक चेतना का विकास करना तथा विभिन्न धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक समूहों के मध्य समन्वय स्थापित करना था। उस समय भारतीय समाज अनेक धार्मिक परंपराओं, दार्शनिक विचारधाराओं तथा सामाजिक वर्गों में विभाजित था। ब्राह्मण, बौद्ध, जैन, आजीवक और अन्य संप्रदायों के बीच वैचारिक मतभेद विद्यमान थे। अशोक ने इन मतभेदों को

समाप्त करने के लिए किसी एक धर्म को राज्यधर्म घोषित नहीं किया, बल्कि धम्म के माध्यम से सभी धर्मों के प्रति सम्मान और सह-अस्तित्व की भावना विकसित करने का प्रयास किया। उनके द्वादश शिलालेख में स्पष्ट रूप से उल्लेख मिलता है कि प्रत्येक सम्प्रदाय का सम्मान करना चाहिए तथा दूसरों की निंदा करने के स्थान पर उनके गुणों की प्रशंसा करनी चाहिए। यह विचार आज भी धार्मिक सहिष्णुता का उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है।

अशोक के धम्म की सबसे बड़ी विशेषता उसकी व्यावहारिकता थी। यह केवल दार्शनिक सिद्धांतों का संग्रह नहीं था, बल्कि दैनिक जीवन में अपनाए जाने वाले नैतिक आचरण का मार्गदर्शन करता था। उन्होंने माता-पिता की सेवा, गुरुजनों का सम्मान, सत्य भाषण, दया, संयम, दान, पशुओं के प्रति करुणा तथा प्रजा के हित में कार्य करने को धम्म का अभिन्न अंग बताया। उन्होंने स्वयं अपने जीवन में इन आदर्शों का पालन किया और राज्य के अधिकारियों को भी इन्हें व्यवहार में लाने का निर्देश दिया। इस प्रकार धम्म केवल व्यक्तिगत आचरण तक सीमित नहीं रहा, बल्कि प्रशासनिक व्यवस्था का भी आधार बना। अशोक का धम्म राज्य और समाज के मध्य नैतिक संबंध स्थापित करने का एक अभिनव प्रयास था। उन्होंने धम्म महामात्रों की नियुक्ति की, जिनका प्रमुख कार्य जनता के नैतिक उत्थान, धार्मिक सहिष्णुता तथा सामाजिक समरसता को प्रोत्साहित करना था। ये अधिकारी विभिन्न समुदायों के मध्य संवाद स्थापित करते थे तथा समाज में सद्भाव बनाए रखने के लिए कार्य करते थे। इससे स्पष्ट होता है कि अशोक धम्म को केवल व्यक्तिगत साधना नहीं, बल्कि सार्वजनिक जीवन का भी आधार मानते थे।

अशोक के धम्म का एक महत्वपूर्ण पक्ष लोककल्याण की भावना है। उन्होंने मानव और पशु दोनों के लिए चिकित्सालय स्थापित कराए, सड़कों के किनारे वृक्ष लगवाए, यात्रियों के लिए विश्रामगृह एवं कुओं का निर्माण कराया तथा औषधियों की व्यवस्था की। इन कार्यों का उद्देश्य केवल प्रशासनिक सुविधा प्रदान करना नहीं था, बल्कि मानव सेवा को धर्म का वास्तविक स्वरूप सिद्ध करना था। अशोक के अनुसार वही शासन श्रेष्ठ है जो प्रजा के सुख-दुःख को अपना सुख-दुःख समझे।

धम्म की अवधारणा में नैतिक अनुशासन को अत्यधिक महत्व दिया गया। अशोक का विश्वास था कि समाज का वास्तविक विकास बाहरी वैभव से नहीं, बल्कि नागरिकों के नैतिक आचरण से संभव है। इसलिए उन्होंने आत्मसंयम, क्रोध पर नियंत्रण, लोभ का त्याग, सत्यवादिता तथा शुद्ध आचरण पर बल दिया। यह नैतिक अनुशासन व्यक्ति के चरित्र निर्माण के साथ-साथ समाज में शांति एवं स्थिरता स्थापित करने का माध्यम भी था। धम्म और बौद्ध धर्म के संबंध का अध्ययन भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह सत्य है कि कलिंग युद्ध के पश्चात अशोक ने बौद्ध धर्म को अपनाया तथा बौद्ध संघ का संरक्षण किया, किंतु उनका धम्म बौद्ध धर्म का पर्याय नहीं था। बौद्ध धर्म चार आर्य सत्त्यों, अष्टांगिक मार्ग, निर्वाण और कर्म-सिद्धांत जैसे दार्शनिक तत्वों पर आधारित है, जबकि अशोक के धम्म में इन दार्शनिक सिद्धांतों का

प्रत्यक्ष उल्लेख नहीं मिलता। उन्होंने अपने अभिलेखों में बौद्ध धर्म की विशिष्ट शिक्षाओं के स्थान पर ऐसे नैतिक मूल्यों का प्रचार किया जिन्हें प्रत्येक धर्म का अनुयायी स्वीकार कर सकता था। इस प्रकार उनका धम्म एक सार्वभौमिक नैतिक दर्शन था, न कि किसी एक धार्मिक सम्प्रदाय का प्रचार।

फिर भी बौद्ध धर्म के प्रभाव को पूर्णतः नकारा नहीं जा सकता। करुणा, अहिंसा, मैत्री, दया, आत्मसंयम तथा प्राणिमात्र के प्रति सहानुभूति जैसे मूल्य बौद्ध धर्म से प्रेरित थे। अंतर केवल इतना था कि अशोक ने इन्हें व्यापक सामाजिक और प्रशासनिक संदर्भ में प्रस्तुत किया। उन्होंने बौद्ध धर्म के आध्यात्मिक पक्ष की अपेक्षा उसके नैतिक और मानवीय पक्ष को अधिक महत्व दिया। यही कारण है कि उनका धम्म ब्राह्मण, जैन, आजीवक तथा अन्य धार्मिक समुदायों के लिए भी समान रूप से स्वीकार्य था। अशोक ने धार्मिक अनुष्ठानों की अपेक्षा नैतिक व्यवहार को अधिक महत्व दिया। उन्होंने स्पष्ट किया कि यज्ञ, बलि अथवा कर्मकाण्ड की अपेक्षा सत्य, दया और सदाचार अधिक श्रेष्ठ हैं। यह विचार भारतीय संस्कृति में नैतिक धर्म की अवधारणा को सुदृढ़ करता है। उनके अनुसार धर्म का वास्तविक स्वरूप बाह्य आडंबरों में नहीं, बल्कि मानव के श्रेष्ठ आचरण में निहित है।

इस प्रकार सम्राट अशोक का धम्म भारतीय इतिहास में नैतिक शासन, सामाजिक समरसता तथा सांस्कृतिक एकता का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करता है। यह धर्म की संकीर्ण सीमाओं से ऊपर उठकर मानवता, करुणा, सहिष्णुता और लोककल्याण पर आधारित जीवन-दर्शन है। आज भी जब विश्व धार्मिक असहिष्णुता, हिंसा और नैतिक संकट जैसी समस्याओं का सामना कर रहा है, तब अशोक का धम्म मानव समाज को शांति, सद्भाव और नैतिक जीवन का मार्ग दिखाने में पूर्णतः प्रासंगिक सिद्ध होता है।

भारतीय समाज पर धम्म का सामाजिक एवं नैतिक प्रभाव

सम्राट अशोक के धम्म का प्रभाव भारतीय समाज के सामाजिक, नैतिक, सांस्कृतिक तथा प्रशासनिक जीवन पर अत्यंत व्यापक रूप से पड़ा। कलिंग युद्ध के उपरान्त अशोक ने जिस नैतिक शासन व्यवस्था की स्थापना की, उसका उद्देश्य केवल राजनीतिक स्थिरता प्राप्त करना नहीं था, बल्कि समाज को ऐसे मूल्यों से जोड़ना था जिनके माध्यम से शांति, समरसता और मानवता का विकास हो सके। उनके धम्म ने भारतीय समाज में नैतिक चेतना का संचार किया और शासन को जनकल्याण की दिशा में अग्रसर किया। अशोक के धम्म का सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक प्रभाव समाज में समरसता की भावना का विकास था। उस समय भारतीय समाज अनेक धार्मिक, जातीय तथा सांस्कृतिक समूहों में विभाजित था। अशोक ने अपने धम्म के माध्यम से सभी समुदायों के बीच पारस्परिक सम्मान और सहयोग की भावना विकसित करने का प्रयास किया। उन्होंने स्पष्ट कहा कि किसी भी धर्म की निंदा नहीं करनी चाहिए,

बल्कि प्रत्येक धर्म के श्रेष्ठ गुणों का सम्मान करना चाहिए। इस नीति ने धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ावा दिया और सामाजिक संघर्षों को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

धम्म के प्रभाव से अहिंसा का आदर्श भारतीय समाज में अधिक सशक्त रूप से स्थापित हुआ। यद्यपि अहिंसा की अवधारणा जैन और बौद्ध धर्म में पूर्व से विद्यमान थी, किंतु अशोक ने इसे शासन और समाज दोनों का आधार बनाया। उन्होंने अनावश्यक पशु-हत्या पर नियंत्रण लगाया, राजकीय शिकार की परंपरा को सीमित किया तथा जीवों के प्रति करुणा का संदेश दिया। इससे समाज में संवेदनशीलता और मानवीय दृष्टिकोण का विकास हुआ। धम्म ने नैतिक जीवन को भी नई दिशा प्रदान की। अशोक ने सत्य, शील, दया, दान, संयम तथा आत्मानुशासन को श्रेष्ठ जीवन के आधार के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने प्रजा को केवल कानून के भय से नहीं, बल्कि नैतिक प्रेरणा से सदाचार अपनाने के लिए प्रेरित किया। इससे सामाजिक जीवन में नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा बढ़ी और नागरिकों के चरित्र निर्माण को महत्व मिला।

अशोक का धम्म लोककल्याण की भावना से भी परिपूर्ण था। उन्होंने चिकित्सालयों की स्थापना, औषधीय पौधों का रोपण, सड़कों के किनारे वृक्ष लगवाने, कुओं का निर्माण कराने तथा यात्रियों के लिए विश्रामगृह बनवाने जैसे अनेक जनहितकारी कार्य किए। इन योजनाओं ने भारतीय समाज में राज्य की जनकल्याणकारी भूमिका को सुदृढ़ किया। यह भारतीय प्रशासनिक इतिहास में कल्याणकारी राज्य की प्रारंभिक अवधारणा का उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है। धम्म का प्रभाव पारिवारिक जीवन पर भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। अशोक ने अपने अभिलेखों में माता-पिता की सेवा, गुरुजनों का सम्मान, बड़ों के प्रति आदर तथा परिवार के सदस्यों के प्रति उत्तरदायित्व को धम्म का महत्वपूर्ण अंग बताया। इससे भारतीय पारिवारिक व्यवस्था में नैतिक अनुशासन तथा पारस्परिक सम्मान की भावना को बल मिला। परिवार को समाज की मूल इकाई मानते हुए उन्होंने उसके नैतिक सुदृढ़ीकरण पर विशेष बल दिया।

सामाजिक जीवन में दया, सेवा और परोपकार की भावना का विकास भी धम्म का महत्वपूर्ण प्रभाव था। अशोक ने धन और शक्ति के प्रदर्शन की अपेक्षा मानव सेवा को श्रेष्ठ धर्म बताया। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे जनता की समस्याओं को संवेदनशीलता के साथ सुनें तथा उनके समाधान के लिए सदैव तत्पर रहें। इससे प्रशासन और जनता के मध्य विश्वास का वातावरण निर्मित हुआ। महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार के लिए भी अशोक ने नैतिक दृष्टिकोण अपनाया। धम्म महामात्रों को महिलाओं के कल्याण और उनकी सुरक्षा पर ध्यान देने का निर्देश दिया गया। इससे समाज में महिलाओं के प्रति सम्मान और संवेदनशीलता की भावना को बढ़ावा मिला।

अशोक के धम्म ने भारतीय समाज में सांस्कृतिक एकता को भी सुदृढ़ किया। उनके अभिलेख भारत के विभिन्न भागों में स्थापित किए गए, जिनमें समान नैतिक संदेश अंकित थे। इससे विविध भाषाओं,

संस्कृतियों और क्षेत्रों के लोगों में साझा नैतिक चेतना का विकास हुआ। यह सांस्कृतिक एकीकरण भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि सम्राट अशोक का धम्म केवल धार्मिक विचार नहीं था, बल्कि भारतीय समाज के नैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण का एक प्रभावी माध्यम था। इसके माध्यम से सामाजिक समरसता, धार्मिक सहिष्णुता, नैतिक जीवन, पारिवारिक आदर्श, लोककल्याण और मानवतावादी संस्कृति को नई दिशा मिली। यही कारण है कि अशोक का धम्म आज भी भारतीय समाज के लिए नैतिक प्रेरणा और सांस्कृतिक आदर्श का महत्वपूर्ण स्रोत माना जाता है।

धार्मिक सहिष्णुता एवं सांस्कृतिक समन्वय में धम्म की भूमिका

(विभिन्न धर्मों के प्रति सम्मान एवं सांस्कृतिक एकता तथा सह-अस्तित्व का विकास)

सम्राट अशोक का धम्म भारतीय इतिहास में धार्मिक सहिष्णुता, सांस्कृतिक समन्वय और सामाजिक एकता का एक अद्वितीय आदर्श प्रस्तुत करता है। कलिंग युद्ध के पश्चात अशोक ने जिस नैतिक शासन व्यवस्था की स्थापना की, उसका प्रमुख उद्देश्य केवल राजनीतिक स्थिरता प्राप्त करना नहीं था, बल्कि एक ऐसे समाज का निर्माण करना था जहाँ विभिन्न धर्मों, संप्रदायों और संस्कृतियों के लोग पारस्परिक सम्मान, सहयोग तथा सद्भाव के साथ जीवन व्यतीत कर सकें। उस समय भारत में वैदिक, बौद्ध, जैन, आजीवक तथा अनेक स्थानीय धार्मिक परंपराएँ प्रचलित थीं। इनके बीच दार्शनिक मतभेद और सामाजिक प्रतिस्पर्धा भी विद्यमान थी। अशोक ने इन मतभेदों को समाप्त करने के लिए किसी एक धर्म को राज्यधर्म घोषित करने के स्थान पर 'धम्म' की सार्वभौमिक अवधारणा प्रस्तुत की, जो सभी धर्मों के लिए समान रूप से ग्राह्य थी।

अशोक के द्वादश प्रमुख शिलालेख में धार्मिक सहिष्णुता का अत्यंत स्पष्ट प्रतिपादन मिलता है। उन्होंने लिखा कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने धर्म का सम्मान करना चाहिए, किंतु अन्य धर्मों की निंदा नहीं करनी चाहिए। जो व्यक्ति केवल अपने धर्म की प्रशंसा और दूसरे धर्मों की आलोचना करता है, वह वास्तव में अपने ही धर्म की हानि करता है। इसके विपरीत यदि वह दूसरे धर्मों के श्रेष्ठ गुणों को समझने और उनका सम्मान करने का प्रयास करता है, तो इससे सभी धर्मों का कल्याण होता है। यह विचार भारतीय इतिहास में धार्मिक उदारता का सर्वोच्च उदाहरण माना जाता है। अशोक ने धर्म को विवाद का विषय न बनाकर नैतिक आचरण का आधार बनाया। उनके लिए धर्म का सार मानवता, करुणा, सत्य, अहिंसा और परोपकार था।

अशोक का धम्म इस तथ्य को स्वीकार करता है कि विभिन्न धार्मिक परंपराएँ अपने-अपने ढंग से सत्य की खोज करती हैं। इसलिए उन्होंने सभी सम्प्रदायों के प्रति समान आदर रखने का संदेश दिया। उनके

शासनकाल में बौद्ध धर्म को संरक्षण अवश्य मिला, किंतु उन्होंने ब्राह्मणों, जैनों, आजीवकों तथा अन्य धार्मिक समुदायों के प्रति भी समान सम्मान बनाए रखा। उनके अभिलेखों में ब्राह्मणों और श्रमणों दोनों के प्रति आदर व्यक्त किया गया है। इससे स्पष्ट होता है कि अशोक किसी धार्मिक पक्षपात के समर्थक नहीं थे, बल्कि वे समन्वयवादी दृष्टिकोण अपनाते थे। धार्मिक सहिष्णुता के साथ-साथ अशोक ने संवाद की संस्कृति को भी प्रोत्साहित किया। उनका मानना था कि विभिन्न विचारधाराओं के मध्य संवाद होने से ज्ञान का विस्तार होता है तथा समाज में परस्पर विश्वास की भावना विकसित होती है। उन्होंने धार्मिक वाद-विवाद के स्थान पर नैतिक सहयोग को महत्व दिया। यह नीति आज के लोकतांत्रिक और बहुलतावादी समाज के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक है। वर्तमान समय में जब धार्मिक असहिष्णुता, कट्टरता तथा सांप्रदायिक संघर्ष अनेक देशों की प्रमुख समस्या बन चुके हैं, तब अशोक का यह दृष्टिकोण वैश्विक शांति के लिए प्रेरणास्रोत सिद्ध होता है।

अशोक के धम्म का दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष सांस्कृतिक समन्वय है। मौर्य साम्राज्य अत्यंत विशाल था, जिसमें उत्तर से दक्षिण तथा पूर्व से पश्चिम तक अनेक भाषाएँ, संस्कृतियाँ, परंपराएँ और जीवन-शैलियाँ विद्यमान थीं। इतनी विशाल विविधता के मध्य राजनीतिक एकता बनाए रखना सरल कार्य नहीं था। अशोक ने इस चुनौती का समाधान सैन्य शक्ति के माध्यम से नहीं, बल्कि साझा नैतिक मूल्यों के माध्यम से किया। उन्होंने धम्म को ऐसी सांस्कृतिक कड़ी बनाया जिसने विभिन्न क्षेत्रों और समुदायों को एक सूत्र में बाँधने का कार्य किया। अशोक के शिलालेख इस सांस्कृतिक एकीकरण के सशक्त माध्यम बने। उन्होंने अपने संदेशों को केवल संस्कृत या किसी एक भाषा में नहीं, बल्कि स्थानीय भाषाओं और लिपियों में अंकित कराया, जिससे विभिन्न क्षेत्रों के लोग उन्हें समझ सकें। उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में यूनानी और अरामाईक भाषाओं का भी प्रयोग किया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि अशोक ने सांस्कृतिक विविधता का सम्मान करते हुए एक व्यापक सांस्कृतिक संवाद स्थापित किया। यह नीति भारतीय सांस्कृतिक बहुलता की प्रारंभिक और सशक्त अभिव्यक्ति मानी जाती है।

धम्म ने सामाजिक समरसता को भी नई दिशा प्रदान की। अशोक ने जाति, धर्म, भाषा अथवा क्षेत्र के आधार पर किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया। उन्होंने सभी वर्गों के नैतिक उत्थान पर समान बल दिया। उनके धम्म महामात्र समाज के विभिन्न वर्गों के मध्य समन्वय स्थापित करने का कार्य करते थे। वे केवल प्रशासनिक अधिकारी नहीं थे, बल्कि नैतिक मार्गदर्शक भी थे, जो समाज में सद्भाव, सहिष्णुता और सहयोग की भावना विकसित करते थे। इससे भारतीय समाज में नैतिक एकता की भावना सुदृढ़ हुई। अशोक ने विदेशों के साथ भी सांस्कृतिक संबंधों को प्रोत्साहित किया। उन्होंने श्रीलंका, नेपाल, अफगानिस्तान, मध्य एशिया, मिस्र, सीरिया तथा यूनानी राज्यों तक बौद्ध धर्म और धम्म के प्रचार के लिए धर्मदूत भेजे। उनके पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा द्वारा श्रीलंका में बौद्ध धर्म का प्रचार भारतीय

सांस्कृतिक इतिहास की अत्यंत महत्वपूर्ण घटना है। इससे भारत और दक्षिण एशिया के मध्य गहरे सांस्कृतिक संबंध स्थापित हुए। यही कारण है कि आज भी श्रीलंका, म्यांमार, थाईलैंड, कंबोडिया, लाओस तथा अन्य बौद्ध देशों में अशोक का नाम अत्यंत सम्मान के साथ लिया जाता है।

धम्म के माध्यम से अशोक ने "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना को व्यावहारिक रूप प्रदान किया। उन्होंने मानव मात्र के साथ-साथ पशु-पक्षियों के प्रति भी करुणा और संरक्षण का संदेश दिया। यह दृष्टिकोण केवल धार्मिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और मानवीय चेतना का भी प्रतीक था। उनके लिए सम्पूर्ण विश्व एक परिवार के समान था, जहाँ सभी प्राणियों के हित का ध्यान रखना प्रत्येक व्यक्ति का नैतिक कर्तव्य है। अशोक की धार्मिक नीति का प्रभाव केवल उनके शासनकाल तक सीमित नहीं रहा। आगे चलकर भारतीय संस्कृति की सहिष्णु, उदार और समन्वयवादी परंपरा के विकास में इसका महत्वपूर्ण योगदान रहा। गुप्तकाल से लेकर मध्यकालीन संत परंपरा तक विभिन्न धार्मिक परंपराओं में समन्वय और सह-अस्तित्व की जो भावना दिखाई देती है, उसके ऐतिहासिक आधारों में अशोक का धम्म भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि अशोक का धम्म धार्मिक सहिष्णुता, सांस्कृतिक समन्वय तथा सामाजिक एकता की ऐसी व्यापक अवधारणा प्रस्तुत करता है, जिसने भारतीय संस्कृति को उदार, समावेशी और मानवतावादी स्वरूप प्रदान किया। आज के बहुसांस्कृतिक समाज में भी उनके विचार समान रूप से प्रासंगिक हैं और वैश्विक शांति तथा अंतरधार्मिक सद्भाव के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होते हैं।

कला, स्थापत्य एवं सांस्कृतिक विरासत पर धम्म का प्रभाव

(स्तूप, स्तंभ, शिलालेख, गुफाएँ एवं बौद्ध स्थापत्य तथा भारतीय कला एवं सांस्कृतिक पहचान का विकास)

सम्राट अशोक के धम्म का प्रभाव केवल नैतिक और सामाजिक जीवन तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसने भारतीय कला, स्थापत्य, वास्तुकला तथा सांस्कृतिक विरासत के विकास को भी नई दिशा प्रदान की। अशोक ने अपने नैतिक संदेशों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए स्थापत्य कला को प्रभावी माध्यम बनाया। उनके शासनकाल में निर्मित स्तूप, स्तंभ, शिलालेख, गुफाएँ, विहार तथा अन्य स्थापत्य स्मारक भारतीय कला के स्वर्णिम अध्याय माने जाते हैं। इन स्मारकों में केवल स्थापत्य सौंदर्य ही नहीं, बल्कि धम्म के नैतिक आदर्शों की सशक्त अभिव्यक्ति भी दिखाई देती है।

अशोक द्वारा निर्मित स्तंभ भारतीय स्थापत्य कला की अद्वितीय उपलब्धि हैं। चुनार के चिकने बलुआ पत्थर से निर्मित ये एकाक्षर स्तंभ अत्यंत परिष्कृत शिल्पकला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इन स्तंभों पर उत्कीर्ण शिलालेखों के माध्यम से अशोक ने अपने धम्म के सिद्धांतों—अहिंसा, करुणा, सत्य, सहिष्णुता,

लोककल्याण तथा नैतिक जीवन—का प्रचार किया। सारनाथ का सिंह-शीर्ष स्तंभ भारतीय मूर्तिकला की उत्कृष्ट कृति माना जाता है, जिसे आज भारत का राष्ट्रीय प्रतीक स्वीकार किया गया है। चार सिंह शक्ति, साहस, आत्मविश्वास और नैतिक नेतृत्व के प्रतीक हैं, जबकि उसके आधार पर निर्मित धर्मचक्र न्याय, गति, प्रगति तथा धर्म के सतत प्रवाह का प्रतिनिधित्व करता है। भारतीय राष्ट्रीय ध्वज में अंकित अशोक चक्र इसी सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है।

अशोक ने बौद्ध स्तूपों के निर्माण को भी व्यापक प्रोत्साहन दिया। बौद्ध परंपरा के अनुसार उन्होंने बुद्ध के अवशेषों को विभाजित कर अनेक स्तूपों का निर्माण कराया। साँची, सारनाथ, धौली, कौशाम्बी तथा अन्य स्थानों के स्तूप भारतीय बौद्ध स्थापत्य की महत्वपूर्ण धरोहर हैं। इन स्तूपों ने केवल धार्मिक आस्था के केंद्र के रूप में ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और शैक्षिक केंद्रों के रूप में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आगे चलकर इन स्तूपों के चारों ओर विहार, शिक्षण संस्थान तथा सांस्कृतिक गतिविधियों का विकास हुआ, जिससे भारतीय संस्कृति का व्यापक विस्तार संभव हुआ।

शिलालेख अशोक की सांस्कृतिक विरासत का सबसे प्रामाणिक स्रोत हैं। भारत, नेपाल, पाकिस्तान तथा अफगानिस्तान के अनेक भागों में प्राप्त उनके शिलालेख प्रशासन, समाज, धर्म और संस्कृति का जीवंत चित्र प्रस्तुत करते हैं। इन अभिलेखों में प्रयुक्त ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपियों ने भारतीय पुरालेख विद्या के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्नीसवीं शताब्दी में जेम्स प्रिन्सेप द्वारा ब्राह्मी लिपि के पाठोद्धार ने भारतीय इतिहास के पुनर्निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया। इस दृष्टि से अशोक के अभिलेख भारतीय सांस्कृतिक इतिहास के अमूल्य दस्तावेज हैं। गुफा स्थापत्य के विकास में भी अशोक का महत्वपूर्ण योगदान रहा। बिहार स्थित बाराबर और नागार्जुनी की गुफाएँ उनकी स्थापत्य दृष्टि का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इन गुफाओं को आजीवक संप्रदाय के साधुओं को समर्पित किया गया था, जिससे स्पष्ट होता है कि अशोक केवल बौद्ध धर्म तक सीमित नहीं थे, बल्कि अन्य धार्मिक परंपराओं के प्रति भी समान सम्मान रखते थे। इन गुफाओं की चमकदार पालिश, सुसंगठित वास्तु योजना तथा उत्कृष्ट शिल्पकला भारतीय शिल्पियों की अद्भुत तकनीकी दक्षता का परिचय देती है।

धम्म ने बौद्ध स्थापत्य को अंतरराष्ट्रीय स्वरूप भी प्रदान किया। अशोक द्वारा भेजे गए धर्मदूतों के साथ भारतीय स्थापत्य परंपराएँ भी श्रीलंका, म्यांमार, थाईलैंड, नेपाल तथा मध्य एशिया तक पहुँचीं। आगे चलकर इन क्षेत्रों में भारतीय शैली से प्रभावित स्तूप, विहार और मंदिर निर्मित हुए। इस प्रकार अशोक के धम्म ने भारतीय कला और स्थापत्य को वैश्विक पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अशोक की स्थापत्य नीति केवल स्मारकों के निर्माण तक सीमित नहीं थी। उन्होंने सार्वजनिक उपयोग के लिए सड़कें, कुएँ, उद्यान, वृक्षारोपण, धर्मशालाएँ तथा चिकित्सालय भी स्थापित कराए। ये निर्माण भारतीय लोककल्याणकारी स्थापत्य के प्रारंभिक उदाहरण माने जाते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि उनके लिए

स्थापत्य केवल सौंदर्य का विषय नहीं था, बल्कि सामाजिक सेवा और मानव कल्याण का प्रभावी साधन भी था।

भारतीय सांस्कृतिक पहचान के निर्माण में अशोक की विरासत अत्यंत महत्वपूर्ण है। स्वतंत्र भारत ने राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में सारनाथ के सिंह-शीर्ष तथा राष्ट्रीय ध्वज में अशोक चक्र को अपनाकर यह सिद्ध किया कि उनकी धम्म-आधारित सांस्कृतिक दृष्टि आज भी भारतीय राष्ट्र की मूल प्रेरणा है। भारतीय संविधान में निहित धर्मनिरपेक्षता, समानता, न्याय और मानव गरिमा के मूल्य भी अप्रत्यक्ष रूप से अशोक की नैतिक परंपरा से साम्य रखते हैं। यूनेस्को द्वारा साँची स्तूप तथा अन्य बौद्ध स्थलों को विश्व धरोहर घोषित किया जाना इस बात का प्रमाण है कि अशोक की सांस्कृतिक विरासत केवल भारत तक सीमित नहीं है, बल्कि सम्पूर्ण मानवता की साझा धरोहर है। आज विश्व के अनेक देशों में अशोक के स्तंभ, धम्मचक्र तथा बौद्ध स्थापत्य भारतीय संस्कृति के प्रतिनिधि प्रतीकों के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

इस प्रकार सम्राट अशोक के धम्म ने भारतीय कला, स्थापत्य, पुरालेख, मूर्तिकला और सांस्कृतिक विरासत को एक नया आयाम प्रदान किया। उनके द्वारा निर्मित स्तूप, स्तंभ, शिलालेख, गुफाएँ और अन्य स्थापत्य स्मारक केवल ऐतिहासिक अवशेष नहीं हैं, बल्कि भारतीय संस्कृति के नैतिक, आध्यात्मिक और मानवीय आदर्शों के स्थायी प्रतीक हैं। उनकी यह विरासत आज भी भारतीय सांस्कृतिक पहचान का आधार है तथा विश्व समुदाय को शांति, सह-अस्तित्व और मानवता का संदेश प्रदान करती है।

समकालीन भारतीय समाज में अशोक के धम्म की प्रासंगिकता

(लोकतांत्रिक मूल्य, सामाजिक सद्भाव, मानवाधिकार, विश्वशांति एवं नैतिक शासन के संदर्भ में धम्म की उपयोगिता)

सम्राट अशोक का धम्म केवल मौर्यकालीन शासन की नैतिक नीति नहीं था, बल्कि वह एक ऐसी सार्वभौमिक जीवन-दृष्टि थी, जिसकी उपयोगिता आज भी भारतीय समाज और वैश्विक मानवता के लिए अत्यंत प्रासंगिक है। वर्तमान युग विज्ञान, तकनीकी प्रगति और आर्थिक विकास का युग होने के बावजूद अनेक सामाजिक, राजनीतिक तथा नैतिक चुनौतियों से जूझ रहा है। धार्मिक कट्टरता, सांप्रदायिक तनाव, हिंसा, आतंकवाद, सामाजिक असमानता, पर्यावरणीय संकट, भ्रष्टाचार तथा नैतिक मूल्यों के हास जैसी समस्याएँ आधुनिक समाज के समक्ष गंभीर प्रश्न खड़े कर रही हैं। ऐसे समय में सम्राट अशोक का धम्म केवल ऐतिहासिक अध्ययन का विषय नहीं रह जाता, बल्कि समकालीन जीवन के लिए एक व्यावहारिक नैतिक मार्गदर्शक के रूप में सामने आता है।

अशोक के धम्म का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष लोकतांत्रिक मूल्यों का समर्थन है। यद्यपि मौर्यकाल राजतंत्र का युग था, फिर भी अशोक ने शासन को नैतिक उत्तरदायित्व, जनकल्याण और लोकहित पर आधारित

बनाया। उन्होंने राजा को प्रजा का संरक्षक माना, न कि केवल शासक। उनके अभिलेखों में बार-बार यह उल्लेख मिलता है कि वे स्वयं को प्रजा का पिता मानते थे तथा प्रजा के सुख-दुःख को अपना सुख-दुःख समझते थे। आधुनिक लोकतंत्र भी इसी सिद्धांत पर आधारित है कि शासन जनता के कल्याण के लिए होता है। भारतीय संविधान में वर्णित न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के आदर्श अशोक के धम्म में प्रतिपादित नैतिक मूल्यों के अत्यंत निकट दिखाई देते हैं।

लोकतांत्रिक व्यवस्था में नागरिकों की सहभागिता, उत्तरदायित्व और पारदर्शिता को विशेष महत्व दिया जाता है। अशोक ने भी अधिकारियों को जनता के प्रति उत्तरदायी बनाया तथा उन्हें समय-समय पर जनता की समस्याओं का समाधान करने के निर्देश दिए। धम्म महामात्रों की नियुक्ति इसी उद्देश्य से की गई थी कि वे समाज के विभिन्न वर्गों के मध्य संवाद स्थापित करें, लोककल्याणकारी योजनाओं का निरीक्षण करें तथा प्रशासन को मानवीय बनाए रखें। आधुनिक सुशासन (Good Governance) की अवधारणा में पारदर्शिता, जवाबदेही, उत्तरदायित्व और जनसहभागिता जिन मूलभूत सिद्धांतों के रूप में स्वीकार किए जाते हैं, उनका प्रारंभिक स्वरूप अशोक के प्रशासन में स्पष्ट दिखाई देता है।

समकालीन भारतीय समाज में सामाजिक सद्भाव की आवश्यकता पहले की अपेक्षा कहीं अधिक बढ़ गई है। भारत विविध धर्मों, भाषाओं, संस्कृतियों तथा जातीय समूहों का देश है। ऐसी बहुलतावादी सामाजिक संरचना में एकता और सद्भाव बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। अशोक का धम्म इसी सामाजिक समरसता का संदेश देता है। उन्होंने किसी एक धर्म या संप्रदाय को श्रेष्ठ घोषित करने के स्थान पर सभी धर्मों के प्रति सम्मान, संवाद और सह-अस्तित्व की भावना को प्रोत्साहित किया। द्वादश शिलालेख में उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि अपने धर्म का सम्मान करते हुए अन्य धर्मों का भी आदर करना चाहिए। यह विचार वर्तमान भारत की धर्मनिरपेक्ष और बहुलतावादी व्यवस्था के लिए अत्यंत प्रासंगिक है।

आज समाज में जातीय संघर्ष, सांप्रदायिक तनाव तथा सामाजिक विभाजन जैसी समस्याएँ समय-समय पर देखने को मिलती हैं। अशोक का धम्म इन चुनौतियों का समाधान नैतिकता, सहिष्णुता और करुणा के माध्यम से प्रस्तुत करता है। यदि समाज में पारस्परिक सम्मान, संवाद और सहयोग की भावना विकसित की जाए, तो अनेक सामाजिक संघर्ष स्वतः समाप्त हो सकते हैं। इस दृष्टि से अशोक का धम्म सामाजिक समरसता की एक स्थायी आधारशिला सिद्ध होता है।

मानवाधिकारों की आधुनिक अवधारणा भी अशोक के धम्म से गहराई से जुड़ी हुई प्रतीत होती है। यद्यपि आधुनिक मानवाधिकारों की औपचारिक घोषणा संयुक्त राष्ट्र द्वारा बीसवीं शताब्दी में की गई, किंतु अशोक ने लगभग तेईस सौ वर्ष पूर्व ही प्रत्येक व्यक्ति तथा प्रत्येक जीव के सम्मान की बात कही थी। उन्होंने प्राणिमात्र के प्रति करुणा, हिंसा में कमी, कैदियों के प्रति उदार व्यवहार, पशुओं की रक्षा,

चिकित्सा सुविधाओं की व्यवस्था तथा सामाजिक न्याय जैसे अनेक मानवीय उपाय अपनाए। उन्होंने मनुष्य ही नहीं, बल्कि पशुओं के लिए भी औषधालय स्थापित कराए और वृक्षारोपण तथा जल-सुविधाओं की व्यवस्था कराई। यह दृष्टिकोण आधुनिक मानवाधिकारों के साथ-साथ पर्यावरणीय अधिकारों का भी प्रारंभिक स्वरूप माना जा सकता है।

समकालीन विश्व में शांति की स्थापना सबसे बड़ी चुनौती है। युद्ध, आतंकवाद, परमाणु हथियारों की होड़ तथा राजनीतिक संघर्षों ने मानवता को गहरे संकट में डाल दिया है। अशोक का जीवन स्वयं इस सत्य का प्रमाण है कि हिंसा कभी स्थायी समाधान नहीं दे सकती। कलिंग युद्ध के बाद उन्होंने युद्ध-विजय के स्थान पर "धम्म-विजय" को श्रेष्ठ माना। उन्होंने घोषणा की कि वास्तविक विजय वही है जो नैतिकता, करुणा और मानवता के माध्यम से प्राप्त हो। आज जब विश्व शांति के लिए संयुक्त राष्ट्र, यूनेस्को तथा अन्य अंतरराष्ट्रीय संस्थाएँ प्रयासरत हैं, तब अशोक का धम्म विश्वबंधुत्व और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की प्रेरणा देता है।

विश्वशांति के संदर्भ में अशोक का एक और महत्वपूर्ण योगदान सांस्कृतिक कूटनीति (Cultural Diplomacy) है। उन्होंने श्रीलंका, नेपाल, अफगानिस्तान, मिस्र, सीरिया तथा यूनानी राज्यों तक अपने धर्मदूत भेजे। इन धर्मदूतों ने केवल बौद्ध धर्म का प्रचार नहीं किया, बल्कि भारतीय संस्कृति, नैतिक मूल्यों तथा शांति का संदेश भी पहुँचाया। वर्तमान समय में सांस्कृतिक आदान-प्रदान, अंतरराष्ट्रीय सहयोग तथा वैश्विक संवाद को विश्वशांति का महत्वपूर्ण आधार माना जाता है। इस दृष्टि से अशोक को विश्व का प्रथम सांस्कृतिक राजदूत भी कहा जा सकता है।

नैतिक शासन (Ethical Governance) के संदर्भ में भी अशोक का धम्म अत्यंत महत्वपूर्ण है। आज प्रशासनिक भ्रष्टाचार, सत्ता का दुरुपयोग, राजनीतिक स्वार्थ तथा नैतिक पतन अनेक देशों की प्रमुख समस्याएँ हैं। अशोक ने शासन को नैतिक मूल्यों से जोड़ते हुए अधिकारियों को सत्यनिष्ठ, न्यायप्रिय तथा जनहितकारी बनने का निर्देश दिया। उन्होंने स्वयं को जनता का सेवक माना और प्रशासन को लोककल्याण का माध्यम बनाया। यदि आधुनिक प्रशासन में ईमानदारी, पारदर्शिता, करुणा तथा उत्तरदायित्व जैसे धम्म के मूल्यों को अपनाया जाए, तो सुशासन की स्थापना अधिक प्रभावी ढंग से की जा सकती है।

समकालीन भारत में पर्यावरण संरक्षण की समस्या भी अत्यंत गंभीर होती जा रही है। जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई, प्रदूषण तथा जैव विविधता के विनाश ने मानव जीवन को संकटग्रस्त कर दिया है। अशोक ने अपने धम्म के अंतर्गत वृक्षारोपण, पशु संरक्षण, जल-स्रोतों का निर्माण तथा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण पर विशेष बल दिया। उन्होंने अनेक पशुओं के वध पर प्रतिबंध लगाया तथा

पर्यावरण के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण अपनाया। यह नीति आज के सतत् विकास (Sustainable Development) की अवधारणा के अनुरूप प्रतीत होती है।

शिक्षा के क्षेत्र में भी अशोक का धम्म प्रेरणादायी है। उनका उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि नैतिक चरित्र का निर्माण था। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा, मानवीय मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा नागरिक चेतना को पुनः सशक्त बनाने की आवश्यकता अनुभव की जा रही है। अशोक का धम्म विद्यार्थियों में अनुशासन, करुणा, सत्यनिष्ठा, सेवा तथा सहिष्णुता जैसे मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

भारतीय संविधान में वर्णित मौलिक कर्तव्यों और नागरिक उत्तरदायित्वों का भी अशोक के धम्म से घनिष्ठ संबंध दिखाई देता है। माता-पिता का सम्मान, समाज के प्रति उत्तरदायित्व, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा, सभी धर्मों के प्रति सम्मान तथा राष्ट्रीय एकता की भावना—ये सभी मूल्य अशोक के धम्म में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से विद्यमान हैं। इस प्रकार उनका धम्म आधुनिक नागरिक जीवन को अधिक उत्तरदायी एवं नैतिक बनाने में सहायक सिद्ध हो सकता है। वर्तमान वैश्वीकरण के युग में आर्थिक प्रतिस्पर्धा और उपभोक्तावाद के कारण सामाजिक संबंधों में स्वार्थपरता और संवेदनहीनता बढ़ती जा रही है। अशोक का धम्म व्यक्ति को आत्मसंयम, संतुलित जीवन, दया, सेवा तथा परोपकार की प्रेरणा देता है। यही कारण है कि उनका धम्म केवल अतीत की विरासत नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी एक जीवंत नैतिक दर्शन है।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि समकालीन भारतीय समाज में अशोक के धम्म की प्रासंगिकता अत्यंत व्यापक और बहुआयामी है। लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना, सामाजिक सद्भाव का विकास, मानवाधिकारों की रक्षा, पर्यावरण संरक्षण, नैतिक शासन, अंतरराष्ट्रीय शांति तथा सांस्कृतिक समन्वय जैसे सभी क्षेत्रों में अशोक का धम्म आज भी मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में स्वीकार किया जा सकता है। यह केवल ऐतिहासिक स्मृति नहीं, बल्कि वर्तमान समाज के नैतिक पुनर्निर्माण का प्रभावी आधार है।

निष्कर्ष

सम्राट अशोक का धम्म भारतीय इतिहास, संस्कृति और दर्शन की ऐसी अनुपम देन है जिसने शासन, समाज और मानव जीवन को नैतिकता के आधार पर पुनर्परिभाषित किया। कलिंग युद्ध के उपरांत अशोक ने जिस धम्म की स्थापना की, उसका उद्देश्य किसी एक धर्म या सम्प्रदाय का विस्तार करना नहीं था, बल्कि संपूर्ण मानव समाज में करुणा, अहिंसा, सत्य, सहिष्णुता, आत्मसंयम तथा लोककल्याण जैसे सार्वभौमिक मूल्यों का प्रसार करना था। उनके धम्म की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वह धार्मिक संकीर्णता से मुक्त होकर व्यावहारिक नैतिक जीवन-दर्शन के रूप में विकसित हुआ।

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि अशोक के धम्म ने भारतीय समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक जीवन पर गहरा प्रभाव डाला। इसने धार्मिक सहिष्णुता, सांस्कृतिक समन्वय, सामाजिक समरसता तथा लोककल्याण की भावना को सुदृढ़ किया। अशोक ने प्रशासन को नैतिक उत्तरदायित्व से जोड़ते हुए सुशासन का ऐसा आदर्श प्रस्तुत किया, जिसमें शासक और प्रजा के मध्य विश्वास, संवाद तथा सेवा की भावना प्रमुख थी। उनके द्वारा निर्मित स्तूप, स्तंभ, शिलालेख, गुफाएँ तथा अन्य स्थापत्य स्मारक आज भी भारतीय सांस्कृतिक विरासत के अमूल्य प्रतीक हैं। समकालीन परिप्रेक्ष्य में अशोक का धम्म और भी अधिक प्रासंगिक प्रतीत होता है। वर्तमान विश्व धार्मिक असहिष्णुता, हिंसा, आतंकवाद, सामाजिक विषमता, पर्यावरणीय संकट, नैतिक पतन तथा राजनीतिक अस्थिरता जैसी गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है। ऐसे समय में अशोक का धम्म मानवता, सह-अस्तित्व, सामाजिक न्याय, विश्वबंधुत्व, पर्यावरण संरक्षण तथा नैतिक शासन की ऐसी जीवन-दृष्टि प्रस्तुत करता है जो आज भी उतनी ही उपयोगी है जितनी लगभग तेईस शताब्दी पूर्व थी।

भारतीय लोकतंत्र के मूल आदर्श—समानता, न्याय, स्वतंत्रता, बंधुत्व, धर्मनिरपेक्षता तथा लोककल्याण—अशोक के धम्म के मूल तत्वों से गहरा साम्य रखते हैं। इसलिए यह कहा जा सकता है कि अशोक का धम्म केवल इतिहास का विषय नहीं, बल्कि आधुनिक राष्ट्र-निर्माण, नैतिक प्रशासन और वैश्विक शांति की दिशा में एक प्रेरणास्रोत है। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सम्राट अशोक का धम्म भारतीय सांस्कृतिक चेतना का शाश्वत नैतिक दर्शन है। यह व्यक्ति, समाज और राज्य के मध्य संतुलन स्थापित करते हुए मानवता को शांति, करुणा, सहिष्णुता और नैतिक जीवन का संदेश देता है। वर्तमान और भविष्य दोनों के लिए अशोक का धम्म एक ऐसे मानवीय आदर्श का प्रतिनिधित्व करता है, जिसकी प्रासंगिकता समय के साथ और अधिक सुदृढ़ होती जा रही है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गोयल, श्रीराम. (1992) नंद-मौर्य साम्राज्य का इतिहास। कुसुमांजलि प्रकाशन।
2. चक्रवर्ती, रणवीर. (2020) भारतीय इतिहास का आदिकाल (प्राचीनतम पर्व से 600 ईस्वी तक)। ओरिएंट ब्लैकस्वॉन प्रा. लि।
3. पाण्डेय, डॉ. राजबली. (2022) अशोक के अभिलेख। ज्ञानमंडल लिमिटेड।
4. बापट, पी. वी. (सम्पा.). (1997) बौद्ध धर्म के 2500 वर्ष (द्वितीय संस्करण)। प्रकाशन विभाग, भारत सरकार।
5. मुखर्जी, डॉ. राधाकुमुद. (1962) अशोक। मोतीलाल बनारसीदास।
6. मुखर्जी, डॉ. राधाकुमुद. (1962) प्राचीन भारत। राजकमल प्रकाशन प्रा. लि।

7. शर्मा, रामशरण. (2004) प्रारंभिक भारत का परिचय। ओरिएंट ब्लैकस्वॉन प्रा. लि।
8. सिंह, उपिन्दर. (2024) प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास। पियर्सन इंडिया।
9. थापर, रोमिला. (2007) मौर्य साम्राज्य का पुनरावलोकन। (प्रदीप कांत चौधरी, अनुवादक)। ग्रंथ शिल्पी (इंडिया) प्रा. लि।
10. थापर, रोमिला. (1977) अशोक तथा मौर्य साम्राज्य का पतन। ग्रंथ शिल्पी।
11. गोखले, बी. बी. (1966) बौद्ध धर्म और अशोक। एशिया पब्लिशिंग हाउस।
12. कोसाम्बी, डी. डी. (1956) भारतीय इतिहास के अध्ययन का परिचय। (हिंदी अनुवाद)। पॉपुलर प्रकाशन।
13. सरकार, डी. सी. (1967) भारतीय इतिहास एवं सभ्यता से संबंधित चयनित अभिलेख (भाग-1)। कलकत्ता विश्वविद्यालय।